International Journal of Advanced Academic Studies 2021; 3(2): 19-23

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(2): 19-23
Received: 10-01-2021
Accepted: 15-02-2021

ओमकार तिवारी
शोध छात्र वाणिज्य, शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय, मैहर जिला सतना, मैहर, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पी.पी. पाण्डेय
प्राध्यापक वाणिज्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, जिला सतना, मैहर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
ओमकार तिवारी
शोध छात्र वाणिज्य, शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय, मैहर जिला सतना, मैहर, मध्य प्रदेश, भारत

सतना जिले के औद्योगिक विकास में जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

ओमकार तिवारी एवं डॉ. पी.पी. पाण्डेय

सारांश
शोधार्थी द्वारा शोधकार्य के सम्पादन के पहले औद्योगिक विकास में जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से सम्बन्धित जरूरी तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी सम्बन्धित उद्यमों में जाकर साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा प्राधिकारियों से प्राथमिक सर्वेक्षण किया गया। प्राथमिक सर्वेक्षण का प्रमुख उद्देश्य औद्योगिक विकास करने में जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र के मदद से सम्बन्धित प्राथमिक स्तर की जानकारी प्राप्त करना रहा। द्वितीयक साक्षात्कार अनुसूची के अन्तर्गत जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र के सहयोग से संचालित की गयी संस्था धंधों के व्यवसायियों से साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा तथ्यों को एकत्रित किया गया। सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षों से यह अभीभूत होता है कि औद्योगिक विकास में जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र का मदद मानक स्तर के अनुरूप हैं तथा अन्य क्षेत्रों के संतुष्टि का स्तर मानक स्तर के समतुल्य है। अतएव जिससे यह फलीभूत होता है कि सतना जिला के औद्योगिक विकास में स्थित औद्योगिक इकाइयों के विकास को अपने शोध उद्देश्य हेतु चुनाव के पीछे एक मूलभूत कारण यह रहा है कि जिला की औद्योगिक संस्थाओं के विकास में उद्यम व व्यापार केन्द्र के मदद, क्षेत्रीय कुशल एवं अकुशल श्रमिकों तथा औद्योगिक संस्थाओं के मुख्य क्षेत्रों के प्रति दायित्वों के निष्पादन की दृष्टिकोण से उपरोक्त एवं प्रभावशाली हो तो संस्था व व्यापार केन्द्र की स्थापना को राष्ट्र में प्रत्येक स्तर पर प्रोत्साहित कर प्रदेश को औद्योगिक विकास के द्वारा राष्ट्र के औद्योगिक विकास को बढ़ाने का प्रयास किया गया है।

मुख्यशब्दः सतना जिला, औद्योगिक विकास, जिला उद्योग, व्यापार केन्द्र

प्रस्तावना

सतना जिला में प्रकृति द्वारा निर्मित प्राकृतिक संसाधनों को औद्योगिक संस्थाओं के माध्यम स्वरूप परिवर्तिक कर अत्यधिक उपयोगी व मूल्यवान वस्तुओं का निर्माण कर उत्पादित करने से जिले का औद्योगिक विकास तेजी से हो रहा है। ऐसे उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं को सतना जिले के कच्चे माल के सहयोग से निर्मित किया जाता है। सतना जिले के औद्योगिक विकास में जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र का योगदान बहुत ही सराहनीय है, वास्तव में औद्योगिक उद्योगों के नियमित एवं क्रमिक विकास होने से लगाया जाता है, जिसमें औद्योगिक संस्थाओं में शनैः–शनैः नवीनता व आधुनिकता का समावेश होता रहता है और मशीनों का उपयोग क्रमशः धीरे–धीरे समयानुसार बढ़ने लगता है। औद्योगिक विकास में स्थिरता न होकर गतिशीलता निरन्तर बनी रहती है जो एक क्षेत्र विशेष के विकास को परिलक्षित करती है। जिस क्षेत्र में जितनी तीव्र गति से व्यावसायिक संस्थाओं का विकास होता है। वह क्षेत्र उतना ही तेजी से विकास की ओर अग्रसर होता है। इस क्रम में सतना जिला भी पीछे नहीं रहा। सतना जिले में औद्योगिक इकाइयों का शुभारम्भ ब्रिटिश शासनकाल से हो गया था और इस क्षेत्र विशेष में औद्योगिक इकाइयों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। औद्योगिक विकास नया आयाम देने के लिए 25 सितम्बर 2014 को 'मेक इन इण्डिया' का शुभारम्भ किया गया, जिसका प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र को मैन्युफैक्चरिंग शोध एवं नवप्रवर्तन समूह के स्वरूप में बदलना है। इसके तहत विकास के मुख्य धारा से जोड़े जाने वाले सेक्टर का चयन कर लिया गया है। जिनमें जिले स्तर, राज्य स्तर एवं ग्लोबल स्तर पर पहचान बनाने की क्षमता है। इसके तहत 7 वर्षीय स्ट्रेटजी की रणनीति अपनायी गयी है। तत्पश्चात् औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने हेतु 2016 को स्टार्टअप इण्डिया, ई विजपरियोजना कौशल विकास, श्रम क्षेत्र सुधार इत्यादि नवीन पहल की गयी। जिसके परिप्रेक्ष्य में सतना जिला काफी तीव्र गति से अग्रसर हो रहा है। जिले के औद्योगिक विकास में जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र द्वारा जिले के शिक्षित बेरोजगारों को स्वरोजगार प्रशिक्षण, कौशल विकास योजना के अन्तर्गत जिले के शिक्षित युवाओं को कौशल विकास की गतिविधियों से प्रशिक्षित करना और इन केन्द्रों में कार्य कर रहे अथवा इन केन्द्रों से जुड़े हुए व्यक्तियों को नगरीय व ग्रामीण अंचलों में जाकर इन केन्द्रों की योजनाओं का लाभ उठाते हेतु उक्त क्षेत्रों के युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करना ताकि इन क्षेत्रों के शिक्षित बेरोजगार युवक इन संस्थाओं की

गतिविधियों से जुड़कर अपने को लाभान्वित कर सके और जिला उद्योग के माध्यम से स्वरोजगार करने अथवा व्यावसायिक संस्था का निर्माण करने हेतु ऑनलाइन आवेदन पत्रों को भरकर कम ब्याज दर धनराशि प्राप्त कर व्यावसायिक संस्था का निमार्ण कर सके। इस दिशा में जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र सराहनीय कार्य कर रहे हैं। इनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही जिले में बेरोजगारी के दर में अत्यन्त कमी आयी है अर्थात सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ है कि जिले में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में काफी कमी आयी है। जिसका प्रमुख कारण यह है कि जिले के उद्योग एवं व्यापार केन्द्र से सर्वाधिक शिक्षित बेरोजगार लोग पिछले 5 वर्षों में जुड़े हैं, जिन्होंने इन केन्द्रों से जुड़कर कम ब्याज दर पर लोन लेकर स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ किये हैं, जिसमें जिले के अन्य शिक्षित युवाओं को रोजगार के अवसर सुलभ हुए हैं और यहां के ग्रामीण एवं शहरीय क्षेत्रों की बेरोजगारी की दर में काफी गिरावट आयी है। सरकार द्वारा संचालित स्टार्टअप इण्डिया से सतना जिले के लोग व्यापार पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं, इसके लिए वे नये उत्पादों को सतना जिले के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में विक्रय हेतु भेजने लगे हैं, इससे जिले के विकास हेतु बहुत गति प्राप्त हुयी है।

सतना जिला औद्योगिक दृष्टि से मध्यप्रदेश का एक सम्पन्न जिला है। यहां पर वृहद औद्योगिक इकाइयां की संख्या 11 है जिसमें सर्वाधिक सीमेंट उत्पादन की औद्योगिक इकाइयां है और दूसरे क्रम पर केवल की संस्थाएं हैं। जिले में सूक्ष्म, मध्यम, लघु एवं कुटीर इकाइयों की संख्या लगभग 15 हजार है। जिनमें जिले के शिक्षित बेरोजगार युवक कार्य पर लगे हुये हैं, सतना जिले के उद्योग एवं व्यापार केन्द्र ने जिले में औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया है क्योंकि सरकार द्वारा जो भी औद्योगिक विकास के लिए नवीन योजनाएं एवं कार्यक्रम बनाये जाते हैं। उन्हें सतना जिले के उद्योग एवं व्यापार केन्द्र के लिए यथा शीघ्र कार्यरूप दे दिया जाता है। जिससे इस क्षेत्र में उद्यम करने के लिए व्यवसायियो को प्रोत्साहन मिलता है और वे इस क्षेत्र में अपना व्यवसाय स्थापित करने के लिए उत्प्रेरित होते हैं। यहां उद्यमियों को आकर्षित होने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि इस जिले में प्राकृतिक संसाधनों के अपार भण्डार है और साथ ही यहां रेलवे का मुख्य जंक्शन होने के कारण यह क्षेत्र देश के बड़े नगरों से रेलवे के माध्यम से काफी लम्बे समय से जुड़ा हुआ है। इस कारण से भी यहां उद्यमी अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने में संकोच नहीं करते क्योंकि इस क्षेत्र में व्यवसाय करने वाले उद्यमियों को कच्ची सामग्री तो सरलता से कम मूल्य पर प्राप्त हो जाती है और साथ ही उत्पादित वस्तुओं को दूसरे राज्यों अथवा बड़े नगरों में विक्रय हेतु भेजने के लिए रेलवे परिवहन का सहयोग सरलता से प्राप्त हो जाता है जिससे उन्हें परिवहन व्यय भी कम देना पड़ता है।

सतना जिले के उद्योग एवं व्यापार केन्द्र जिले में औद्योगिक संस्थाओं की स्थापना हेतु उद्यमियों को सहज वातावरण कराते हैं, जिससे यहां उद्यम स्थापित करने वाले जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र में अपने उद्यम का आनलाइन पंजीयन कराते हैं। यह केन्द्र उद्यमियों को उद्यम स्थापित कराने हेतु भूमि की व्यवस्था करने में भी सहयोग प्रदान करती है। जिसके लिए यह भूराजस्व विभाग से मिलकर व्यवसायियों को औद्योगिक इकाई स्थापित करने हेतु कम कीमत पर भू आवंटित कराते हैं। इससे सतना जिले के शिक्षित युवाओं एवं अन्य क्षेत्रो के साहसियों को इस क्षेत्र में उद्यम करने की प्रेरणा मिलती है। क्योंकि प्रत्येक साहसी उन्हीं क्षेत्रों में अपना व्यवसाय स्थापित करना चाहती है, जहां पर उसे उद्यम से सम्बन्धित कच्चा माल नजदीकी क्षेत्रों से, परिवहन की अच्छी व्यवस्था, बिजली, पानी एवं श्रम के साधन पर्याप्त व सुलभ मात्रा में उपलब्ध होते हैं। चूंकि यह जिला इन संसाधनों को सुलभ कराने में जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र के माध्यम से उद्यमियों को सरलता से उपलब्ध कराता है, इसलिए सतना जिले में उद्यम से सम्बन्धित सभी सुविधाएं जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र के माध्यम से सहजतापूर्वक प्राप्त हो जाने के कारण ही उद्यमी यहां पर अपने उद्योगों को संचालित करने हेतु प्रेरित होते हैं ताकि उन्हें उपरोक्त संसाधनों को जुटाने में काफी धन व्यय न करना पड़े।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से मिश्रा एवं पुरी (2007)[1], सिंह व निगम (1971–72)[2], शर्मा (2004)[3], जैन (2006)[4], चतुर्भुज (2007–08)[5] एवं सोंधिया (2019)[6] औद्योगिक विकास में जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र के योगदान से सम्बन्धित कार्य किये है।

शोध विधि

शोध अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया है। प्राथमिक आंकड़ों के प्रयोग हेतु अनुसूची का प्रयोग और द्वितीय आंकड़ों के लिए पत्र–पत्रिकाओं, शोध ग्रन्थों एवं शोध पत्रों इत्यादि का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने अपने शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए प्रमुखतः सतना जिले के औद्योगिक विकास में जिला उद्योग एवं व्यापार केन्द्र के योगदान के अन्तर्गत सतना जिले के उद्योग केन्द्र में कार्यरत सम्पूर्ण कर्मचारियों से निदर्शन प्रविधि के अन्तर्गत दैव निदर्शन प्रणाली की प्रविधि में से सविचार निदर्शन द्वारा लगभग कल 40 कर्मचारियों में से 50 प्रतिशत कर्मचारियों का चयन कर साक्षात्कार के माध्यम से समंकों को संकलित किया गया है जिनमें 20 कर्मचारियों द्वारा प्राथमिक सर्वेक्षण के माध्यम से समंकों का संकलन कर कोडिंग /संकेतीकरण करने के बाद प्रश्नों के स्वरूप के साथ उनके उत्तरों एवं प्रतिशत समंकों का सारणी में प्रदर्शित कर विश्लेषण किया गया है।

इसी प्रकार जिला उद्योग के कर्मचारियों द्वारा प्राप्त प्रत्युत्तरों की सत्यता का आकलन करने के लिए सतना जिले के उद्योग एवं व्यापार केन्द्र में पंजीकृत लगभग 15000 व्यावसायिक संस्थाओं में दैव निदर्शन प्रणाली की उपविधि सविचार निदर्शन के माध्यम से 10 प्रतिशत सतना जिले के उद्यमियों का चयन कर साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से समंकों का संकलन किया गया है जिसके लिए सतना जिले के 15000 इकाइयों में से 10 प्रतिशत के आधार पर 1500 व्यावसायिक संस्थाओं पर उद्यमियों द्वारा प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर अनुसूची के माध्यम से आंकड़ों का संग्रहण किया गया है ताकि इस तथ्य की पुष्टि की जा सके कि जिला उद्योग केन्द्र का औद्योगिक विकास में कैसी भूमिका है। इसका आकलन के लिए अनुसूची के माध्यम से संकलित किये ये समंकों का संकेतीकरण कर प्रश्नों के स्वरूप के साथ वर्गीकृत कर सारणियों में प्रस्तुत कर अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है जो क्रमशः इस प्रकार है –

सतना जिले के व्यावसायिक संस्थाओं की स्वरूप से सम्बन्धित – सतना जिले में स्थापित औद्योगिक संस्थाओं के वर्षों, संस्थाओं का पैतृक होने, व्यावसायिक उद्यमियों को संस्था स्थापित करने की प्रेरणा, व्यवसाय में अन्य सदस्यों का सहयोग तथा परिवार के सदस्यों के सहयोग करने पर उन्हें पारिश्रमिक देने से सम्बन्धित समंकों को साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित किया गया है, जिनका संकेतीकरण करने के बाद वर्गीकरण कर सारणी क्रमांक 1 के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 1: सतना जिले के उद्यम करने वाले व्यवसायियों के सम्बन्ध में जानकारी

संकेतक–ए व प्रश्नों का स्वरूप	हितग्राहियों की संख्या	प्राप्त प्रत्युत्तर			
		5–10 वर्ष	प्रतिशत	15–20 वर्ष	प्रतिशत
आप अपने इस व्यवसाय में कितने वर्षों से कर रहे हैं से सम्बन्धित	1500	875	25.69	625	15.27
हितग्राही का व्यवसाय पैतृक होने से सम्बन्धी हाँ /नहीं	1500	532	15.62	968	23.64
आपके यह व्यवसाय करने की प्रेरणा से सम्बन्धी (स्वयं जिला उद्योग केन्द्र/अभिभावक दूसरों से)	1500	945	27.75	555	13.55
आपके व्यवसाय में परिवार के सदस्यों के सहयोग से सम्बन्धी हाँ/नहीं	1500	638	18.73	862	21.06
परिवार के सदस्य सहयोग करते हैं तो उनको पारिश्रमिक देने सम्बन्धी हाँ/नहीं	1500	416	12.21	1084	26.48
योग	7500	3406	100	4094	100.00

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि यह सतना जिले में उद्यम करने वाले व्यवसायियों के सम्बन्ध में जानकारी से सम्बन्धित है, जिसमें संकेतक –ए के अन्तर्गत प्रश्नों के स्वरूप में प्रथम क्रम पर व्यवसायियों के व्यवसाय करने के समयावधि से सम्बन्धित है, जिसमें 875 हितग्राहियों ने बतलाया की वे यह व्यवसाय 5–10 वर्षों से कर रहे हैं, जिनका प्रतिशत 25.69 है और वहीं 625 हितग्राहियों ने बतलाया कि वे यह व्यवसाय 15–20 वर्षों से कर रहे हैं जिनका प्रतिशत 15.27 है। इसी अनुक्रम में द्वितीय क्रम पर हितग्राही का व्यवसाय पैतृक होने से सम्बन्धित समंकों में से 532 हितग्राहियों द्वारा पैतृक व्यवसाय के सम्बन्ध उत्तर हां में प्राप्त हुआ जिनका प्रतिशत 15.62 है और 968 हितग्राहियों ने पैतृक व्यवसाय के सम्बन्ध में अपना उत्तर नहीं में दिया जिनका प्रतिशत 23.64 है। ठीक इसी प्रकार तीसरे क्रम पर उद्यमियों के व्यवसाय करने की प्रेरणा कहां से मिली इस सम्बन्ध में 945 हितग्राहियों ने बतलाया मुझे व्यवसाय करने की प्रेरणा स्वयं जिला उद्योग केन्द्र द्वारा मिली है जिनका प्रतिशत 27.75 है और 555 व्यवसायियों ने व्यवसाय करने सम्बन्धी प्रेरणा अभिभावक दूसरों से मिली है जिनका प्रतिशत 13.55 है। इसी प्रकार चौथे क्रम पर व्यवसाय में परिवार के सदस्यों के सहयोग से सम्बन्धित प्रश्न व्यवसायियों से किये गये जिसमें 638 व्यवसायियों ने बतलाया कि परिवार के सदस्य द्वारा सहयोग मिलता है जिनका 18.73 प्रतिशत है तथा 862 व्यवसायियों ने बतलाया कि परिवार का सहयोग नहीं मिलता है, जिनका प्रतिशत 21.06 है। इसी अनुक्रम में पांचवे क्रम पर परिवार के सदस्य मदद करते हैं तो उनको पारिश्रमिक दिया जाता है से सम्बन्धित है जिसमें 416 हितग्राहियों ने बताया कि परिवार के सदस्य मदद करते हैं तो उनको पारिश्रमिक दिया जाता है जिनका प्रतिशत 12.21 है तथा 1084 हितग्राहियों ने बताया कि परिवार के सदस्य सहयोग करते हैं तो उन्हें पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है जिनका प्रतिशत 26.48 है।

सतना जिले के व्यवसायियों का जिला उद्योग केन्द्र से प्रशिक्षण लेने से सम्बन्धित –

सतना जिले में उद्यमियों द्वारा व्यवसाय करने के लिए जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से प्रशिक्षण लेने से सम्बन्धित है, जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र के माध्यम से प्रशिक्षण लेने वाले व्यक्तियों से धनराशि ली जाती है, व्यक्तियों द्वारा ली गयी धनराशि जिला उद्योग केन्द्र में जमा होती है, उद्यमियों को व्यवसाय करने के लिए जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से मदद मिलता है और स्वरोजगार करने के लिए कितने वर्ष पहले जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से प्रशिक्षण ली जाती है, से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर हितग्राहियों से प्राप्त किये गये हैं, जिनका विवरण सारणी क्रमांक 2 में प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है –

सारणी 2: सतना जिले के व्यवसायियों का जिला उद्योग केन्द्र से प्रशिक्षण से सम्बन्धी

संकेतक–बी व प्रश्नों का स्वरूप	हितग्राहियों की संख्या	प्राप्त प्रत्युत्तर			
		हॉ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
व्यवसाय करने हेतु जिला उद्योग केन्द्र से प्रशिक्षण लेने सम्बन्धी	1500	972	15.88	528	38.32
प्रशिक्षण के लिए जिला उद्योग केन्द्र द्वारा धनराशि लेने से सम्बन्धी हाँ/नहीं	1500	1332	21.76	168	12.19
धन राशि ली गयी तो वह किस रूप में से सम्बन्धी (पंजीयन हेतु/रिश्वत अन्य दूसरे रूप में)	1500	1332	21.76	168	12.19
व्यवसाय करने के लिए जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से सहयोग मिलने से सम्बन्धी हाँ/नहीं	1500	1450	23.68	50	3.63
स्वरोजगार करने हेतु कितने वर्ष पहले जिला उद्योग केन्द्र से प्रशिक्षण लेने से सम्बन्धी (5–10 वर्ष/15–20 वर्ष)	1500	1036	16.92	464	33.67
योग	7500	6122	100	1378	100.00

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 2 से यह स्पष्ट होता है कि यह सतना जिले के व्यवसायियों का जिला उद्योग केन्द्र से प्रशिक्षण से सम्बन्धित है। जिसमें कोडिंग–बी के तहत प्रश्नों के स्वरूप में सर्वप्रथम उद्यमियों के व्यवसाय करने के लिए जिला उद्योग केन्द्र से प्रशिक्षण लिया है, जिनमें 972 व्यवसायियों ने अपना अभिमत हाँ दिया जिनका प्रतिशत 15.88 है तथा 528 व्यवसायियों ने उद्यमियों के व्यवसाय करने के लिए जिला केन्द्र से प्रशिक्षण लिया है अपना अभिमत नहीं में दिया है जिनका प्रतिशत 38.32 है। इसी प्रकार व्यवसायियों से प्रशिक्षण के लिए जिला उद्योग केन्द्र द्वारा धनराशि ली जाती है से सम्बन्धित है जिसमें 1332 हितग्राहियों तक प्रशिक्षण हेतु जिला उद्योग केन्द्र द्वारा धनराशि ली जाती है से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर हाँ में प्राप्त हुआ जिनका प्रतिशत 21.76 है तथा 168 हितग्राहियों का प्रशिक्षण हेतु जिला उद्योग द्वारा धनराशि लेने सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर नहीं में प्राप्त हुआ है जिनका प्रतिशत 12.19 है। इसी अनुक्रम में जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र द्वारा धनराशि हितग्राहियों से लिया गया तो वह किस स्वरूप में से सम्बन्धित है जिसमें 1332 हितग्राहियों ने बतलाया कि जिला उद्योग केन्द्र द्वारा लिया गया प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले हितग्राहियों से धनराशि पंजीयन हेतु था जिनका प्रतिशत 21.76 है और 168 हितग्राहियों ने बतलाया कि जिला उद्योग केन्द्र द्वारा धनराशि प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले हितग्राहियों से धनराशि रिश्वत अन्य दूसरे स्वरूप में ली जाती थी जिनका प्रतिशत 12.19 है। इसी प्रकार उद्यमियों को व्यवसाय करने के लिए जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से सहयोग मिलने से

सम्बन्धित है जिसमें 1450 व्यवसायियों ने उत्तर दिया कि व्यवसाय करने के लिए जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से मदद मिलती है, जिनका प्रतिशत 23.68 है तथा 50 व्यवसायियों ने उत्तर में कहा कि सहयोग नहीं मिलती है जिनका प्रतिशत 3.63 है। इसी अनुक्रम में उद्यमियों को स्वरोजगार करने के लिए जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से प्रशिक्षण कितने वर्ष पहले लेने से सम्बन्धित है जिनमें 1036 हितग्राहियों ने बतलाया कि स्वरोजगार करने हेतु जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से प्रशिक्षण 5–10 वर्ष पहले लिये थे, जिनका प्रतिशत 16.92 है और 464 हितग्राहियों ने बतलाया कि व्यवसाय करने हेतु जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से प्रशिक्षण 15–20 वर्ष पहले प्राप्त किये थे, जिनका प्रतिशत 33.67 है।

उद्योगपतियों को व्यावसायिक संस्थाओं से लाभ प्राप्त से सम्बन्धित –

सतना जिले में उद्योगपतियों ने जिला उद्योग व व्यापार के द्वारा जो औद्योगिक इकाइयां स्थापित किया था। उन औद्योगिक इकाइयों के उत्पादन होने वाली सामग्रियों को विक्रय करने के पश्चात उद्यमियों/व्यवसायियों को प्राप्त होने वाले कीमतों से है। उद्यमियों को इन व्यवसायिक संस्थानों से मासिक आय कितना प्राप्त होता है और उद्यमियों को व्यावसायिक संस्थाओं से प्रतिदिन होने वाली बचत से सम्बन्धित प्रश्न उद्यमियों से साक्षात्कार प्रश्नावली के माध्यम से शोधार्थी द्वारा पूछे गये। शोधकर्ता ने व्यावसायिक द्वारा दिये गये प्रत्युत्तर को सारणी क्रमांक 3 में व्यक्त किया है जो इस प्रकार है –

सारणी 3: व्यावसायिक संस्थाओं के लाभ से सम्बन्धित

संकेतक–ई व प्रश्नों का स्वरूप	उद्यमियों की संख्या	प्राप्त प्रत्युत्तर							
		1500 रू.	प्रतिशत	30000 रू.	प्रतिशत	50000 रू.	प्रतिशत	100000 रू.	प्रतिशत
उद्यमियों को व्यवसाय से होने वाली मासिक आय से सम्बन्धी	1500	133	35.36	635	51.29	603	59.47	29	32.58
उद्यम से प्रतिदिन होने वाली बचत से सम्बन्धित	1500	426	64.64	603	48.71	411	40.53	60	67.42
योग	3000	659	100	1238	100	1014	100	89	100

स्रोत – प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी क्रमांक 3 को अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि यह सारणी व्यवसायिक संस्थानों के लाभ से सम्बन्धित है जो संकेतक –ई के तहत प्रश्नों के स्वरूप में सबसे पहले उद्यमियों को व्यवसाय से प्राप्त होने वाली मासिक आय से सम्बन्धी प्रश्न उद्यमियों से किये गये जिसमें 133 व्यक्तियों ने व्यवसाय से मिलने वाले मासिक आय 15000 रू. बतलाया, जिनका प्रतिशत 35.36 है और 635 उद्यमियों ने बतलाया कि उन्हें व्यवसाय से प्राप्त होने वाली मासिक आय 30000 रूपये है जिनका प्रतिशत 57.29 है तथा 603 व्यवसायियों ने अपने उत्तर में बताया कि उन्हें उद्यम से प्राप्त होने वाली मासिक आय रूपये 50000 है जिनका प्रतिशत 59.47 है और मात्र 29 उद्यमियों ने कहा कि उन्हें इन संस्थाओं से प्राप्त होने वाली मासिक आय रूपये 100000 है जिनका प्रतिशत 32.58 है। ठीक इसी प्रकार व्यवसायियों को संस्थाओं से प्रतिदिन होने वाली बचत से सम्बन्धित है, जिसमें 426 उद्यमियो ने बतलाया कि उन्हें व्यवसाय से प्रतिदिन होने वाली बचत रूपये 500 है जिनका प्रतिशत 64.64 है और 603 उद्योगपतियों ने कहा कि व्यवसाय में होने वाली प्रतिदिन का बचत रूपये 1000 है, जिनका प्रतिशत 48.71 है तथा 411 उद्यमियों द्वारा उत्तर में यह प्राप्त हुआ कि उन्हें इस उद्यम से रूपये 2000 तक प्रतिदिन होने वाली बचत है जिनका प्रतिशत 40.53 है और 60 उद्यमियों ने बतलाया कि संस्थाओं से प्रतिदिन होने वाली बचत रूपये 30000 है जिनका प्रतिशत 67.42 है।

व्यवसाय संचालन से उद्यमियों पर पड़ने वाले अनुकूल प्रभाव से सम्बन्धित –

जिले में व्यवसाय संचालन से व्यवसायियों पर पड़ने वाले अनुकूल प्रभाव से है। उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं से आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ, उद्यमियों द्वारा व्यवसाय शुरू करने से लेकर अब तक में इसका विस्तार कर पाने में सफलता मिली और व्यवसायियों के व्यवसाय संतुष्टि से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर शोधार्थी ने प्राप्त कर सारणी क्रमांक 4 में स्पष्ट किया है, जो इस प्रकार है –

सारणी 4: व्यवसाय संचालन से उद्यमियों पर पड़ने वाले अनुकूल प्रभाव से सम्बन्धी

संकेतक–जी व प्रश्नों का स्वरूप	उद्यमियों की संख्या	प्राप्त प्रत्युत्तर			
		हॉ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
यह व्यवसाय करने से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार से सम्बन्धी	1500	1397	32.90	103	40.55
व्यवसाय प्रारम्भ करने के बाद इसके विस्तार करने से सम्बन्धी	1500	1408	33.16	92	36.22
उद्यमियों के व्यवसाय से संतुष्टि सम्बन्धी	1500	1441	33.94	59	23.23
योग	4500	4246	100	254	100.00

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

उपरोक्त सारणी कं. 4 का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि यह व्यवसाय संचालन से व्यवसायियों पर पड़ने वाले अनुकूल प्रभाव से सम्बन्धित है जिसमें संकेतक जी के तहत प्रश्नों के स्वरूप में सर्वप्रथम यह व्यवसाय करने से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार से सम्बन्धी प्रश्न किये गये। जिनमें 1397 हितग्राहियों से व्यवसाय करने से आर्थिक स्थिति में सुधार में उत्तर हां में प्राप्त हुआ जिनका प्रतिशत 32.90 है और 103 हितग्राहियों ने व्यवसाय करने से आर्थिक स्थिति में सुधार में उत्तर नहीं प्रापत हुआ है जिनका 40.55 है। इसी प्रकार व्यवसाय प्रारम्भ करने के बाद इसके विस्तार करने से सम्बन्धित प्रश्न किये गये जिनमें 1408 व्यवसायियों ने बतलाया कि व्यवसाय शुरू करने के पश्चात् इनके विस्तार करने से समर्थ हुए हैं, जिनका प्रतिशत 53.16 है और 92 व्यवसायियों ने बताया कि व्यवसाय आरम्भ करने के बाद इसके विस्तार में समर्थ नहीं हुये हैं जिनका प्रतिशत 36.22 है। ठीक इसी अनुक्रम में उद्यमियों से व्यवसाय से संतुष्टि से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये। जिसमें 1441 उद्यमियों ने यह स्वीकार किया कि वे व्यवसाय से पूर्णतः संतुष्ट हैं, जिनका प्रतिशत 33.94 है तथा 59 उद्यमियों ने बताया कि वे व्यवसाय से पूर्णतः संतुष्ट नहीं है जिनका प्रतिशत 23.23 है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः सतना जिले में उद्यम करने वाले व्यवसायियों में अत्यधिक व्यवसाय नवीन स्तर पर किये गये हैं और अत्यधिक व्यवसायियों को उद्यम करने की प्रेरणा स्वयं व जिला उद्योग केन्द्र से मिली है, अत्यधिक व्यवसायों में परिवार के सदस्यों का सहयोग नहीं जाता तथा सहयोग करने वाले सदस्यों में से सर्वाधिक सदस्यों को पारिश्रमिक नहीं दिया जाता जिससे स्पष्ट होता है कि सतना जिले के सर्वाधिक व्यवसाय नवीन तकनीकी का प्रयोग कर संचालित हो रहे हैं। इसलिए सतना जिला आत्मनिर्भर बनने की ओर तेजी से बढ़ रहा है जो जिले के विकास के साथ–साथ राज्य को भी विकास की मुख्य धारा से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग प्रदान करेगा।

उद्यमियों को व्यवसाय करने हेतु जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से प्रशिक्षण ली गयी है, हितग्राहियों को प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु जिला उद्योग केन्द्र द्वारा धनराशि ली गयी है, और व्यवसायियों से धनराशि पंजीयन हेतु लिये गये हैं एवं उद्यमियों को व्यवसाय करने हेतु जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र से मदद प्राप्त होता है तथा व्यवसाय करने के लिए जिला उद्योग केन्द्र से प्रशिक्षण 5–10 वर्ष पहले प्राप्त किये गये थे। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सतना जिले में औद्योगिक विकास पूर्व की तुलना में आज तेजी से हो रहा है।

सतना जिले मे जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र के द्वारा स्थापित किये गये औद्योगिक इकाइयों से व्यावसायियों को सर्वाधिक मासिक आय रूपये 30000 तक प्राप्त होता है और इन संस्थाओं से व्यवसायियों को प्रतिदिन होने वाली बचत रूपये 1000 है। जिससे स्पष्ट होता है कि उद्यमियों को इन व्यवसायों से अत्यधिक लाभ की प्राप्ति होती है जिसके कारण उनका जीवन स्तर पहले की अपेक्षा काफी हद तक अच्छी स्थिति में पहुंच गयी है जो जिले के विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। सतना जिला में जिला उद्योग व व्यापार के द्वारा व्यवसायियों को आसानीपूर्वक कच्चा माल प्राप्त हो जाता है जिसके व्यवसायियों को अपना उद्योग संचालित करने में सफलता प्राप्त होती है। उद्यमियों को अपने व्यवसाय से सर्वाधिक लाभ मिलता है, जिससे इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और उद्यमी अपने आपको निर्भर बनाने में सक्षम हुये हैं। व्यवसायियों ने उद्यम प्रारम्भ करने से लेकर अब तक इसका विस्तार करने सर्वाधिक रूप से सफल हुये हैं और उद्यमी अपने व्यवसाय से काफी संतुष्ट हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जिले में उद्योगपतियों ने जिला उद्योग व व्यापार केन्द्र द्वारा जो इकाइयां स्थापित किये हैं, इन इकाइयों से वे पूर्णरूप से संतुष्ट हैं।

संदर्भ

1. मिश्रा, एस.के. एवं पुरी, बी.के. – भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, 2007.
2. सिंह व निगम – भारतीय ग्राम्य अर्थशासत्र, नवयुग साहित्य सदन, आगरा, 1971–72.
3. शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश – रिसर्च मेथडोलांजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2004.
4. जैन, डॉ. एम.के. – शोध विधियाँ, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2006.
5. चतुर्भुज, डॉ. मामोरिया – भारत का आर्थिक समस्याएँ, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूट्रस, 2007–08.
6- सोंधिया, आरती – रीवा जिले में महिला उद्यमिता एवंस्वरोजगारमूलक योजनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन, Int. J Rev. and Res. Social Sci 2019;7(2):511-516.